

DPN 6277

Title : 1. ~~अगस्त्य व्रत विधान~~ / AGASTYA VRATA VIDHANA
2. ~~पञ्चक दान विधि~~ / PAÑCAKA DĀNTI VIDHI
3. ~~सूर्य पूजा विधि~~ / SŪRYAPŪJĀ VIDHI

Run. No. 6968

Cat. No. 22

Micro. No.

Subject ~~कर्मकाण्ड~~
Karmakāṇḍa

Religion : Hindu / Bauddha

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 20 × 8.2

Folios 31 Lines (in a page) 7

Compl. / Incompl.

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor

राजेन्द्र श्रेष्ठ

Date: NS / SS / VS / KS 820

वंशीधर शर्मा

Ruler / place

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyaṣaphu /

Condition : fine / damaged by worms, rats, water /

Beginning, colophon, post-colophon :

1. ~~अगस्त्य व्रत विधानं लिख्यते ॥ इत्यगस्त्य व्रत स्मृतं ॥ अगस्त्या थाण्डिल पूजा विधिः ॥~~
इति अगस्त्या थाण्डिल पूजा विधिः ॥
2. ~~पञ्चक दान विधिः ॥ इति पञ्चक दान विधिः ॥ शुभः ॥~~ 3. अथ सूर्य पूजा विधिः लिख्यते ॥
इति सूर्य पूजा विधिः स्माप्तः ॥

पंचकवक्षत्रे मंत्रात्म्य

श्रीकृष्णमया
रंगकृष्णं

शान्तिः श्रीयामश

यामाताममतामारा॥
मापनकद्वेन

रंगगौरिरंग॥

श्रीगर्दीभयश
श्रीसानदाश॥
श्रीसनस्येश॥

विपतिं दध. मननं नाम विश्रुताया गाले च स गतिर्य. मतर्क्य
नमामहे॥ अरु गन्धदि॥ यद॥ तू डाय वृषास नाय नम॥ ॐ नै॥
ॐ नै न वृषास तू दं. त्रिभूल व्याल का प्रिली. मत्र युद्धाव दा गव.
चतु मोर्लि त्रि लोचनं ॥ नम मं ह वा येति॥ सा गु॥ न
म लि वा येति॥ अरु गन्धदि॥ स्वा न द्या॥ ॐ डाय ने न व ग स नाय
१॥ ॐ नै॥ ने राव न ग जा तू दं. ह म व ल्कि नी ठिनी. म क स ह सु
नयनं. वज्र पा नि वि ण व रं॥ ॐ नै य र्थ १॥ ग ग र मि न्द्र॥ सा गु॥

ॐ दुःसुत्रयति॥ अरु. वज्र रुक्मा महा वर ४ भाग य क्का विष्वा देव
सु सौ ॐ डाय नी त म १॥ अरु गन्धदि॥ त्रि र्थ ३॥ वृषास य म क रास
नाय १॥ य र्थ १॥ ॐ नै॥ रु. ना ग जा ण ध रं ह र्म. त लो य द्यु ति
विग्रहं। ग न्ध क्क व लं ॐ य. व र्ण म क रा स र्ज ॥ ॐ नै य र्थ १॥
ॐ नै॥ ॐ नै॥ सा गु॥ उं व र्ण ४ सु व नी विष्क ४ य र्थ ४ नि
न म वि व ४ वा ण रुक्मा महा वी र्थ ग र्म नि र्थ त मा न म १॥ अरु
गन्धदि॥ ग रु ना क या स॥ अरु क्क मा दि॥ व र्थ ४॥ सा दान द ग सा

सुन्दरीसिंहिर् अवजतिमवधूकपद्यरागसमल्लिखी। नुकास्यपद्यराग
दित्रकाविसिंहिर् अकपद्यकप्राभाऊ, द्वालायाचिदिगन्तरी, सग
र्लसागर्लसार्ग, सगर्लचमल्लुर्ल। नुर्वध्यावमलेन, नकपूर्यनअज
य॥ एगवगश्रीसुमयिध्यानयूर्यनम॥ ॥ सान्नी॥ यावनेसर्वगीर्
नी, गगदिसयसागता॥ सान्नीयुकलियादयी, नलिने॥ सापयामेद॥ ॥
यश्चमगसान॥ ॥ नकचन्दन॥ उं गवयियगर्नदवे, नकचन्दनकईमी,
पुगीकसर्वदयेभ, वध्याकुरुदलायन॥ ॥ सिंदूर॥ उं एवकिनग

वध्यार्ल, सिंदूरदयिगगव। पुगीकसर्वलाकषू, पुहल्लदलसिद्धये॥ ॥
कैक्रम॥ उं ॐ दकाभीरदल्लाह्, कैंकर्मगवदल्लरी। पुगीकसर्वला
कषू, समसोराग्नवृद्धये॥ ॥ नकाकृग॥ उं अकृनेअकृयाकामे,
धम्मकामाथसाधक। ॐ यिगभवरैदहि, पत्रुययगीगति॥ ॥
यक्षीपवीगदिया॥ उं नकसर्गयवीगच, नकचन्दनयचित्। गृहान
दहिमेरुन, लानदीपदिवाकरी॥ ॥ वसु॥ उं यथालाहमिदेवसु,
एक्यादईदिवाकरी। पुगीकवनवसुध्या, गनिनमसदाकृ॥ ॥

॥ माता पूषा ॥ ॐ पूषा माता मिमांसा देव गृहाण धनवृद्धयः । दूर्गा गणेशमा
गीतः ॥ ४ ॥ स्विगस्तु दिवाकन ॥ ॥ गान्धाना ॥ पूषा द्वादशमास्यां ॥ उरुमं
निविसेत् सर्वं । गृहाण देव देव गृहाण दिवाय नमः ॥ ॥ दमन ॥
सुगन्धं दमनं पूषा सुप्रियं कामसं हव । गृहाण सर्वं दिवानाथ सुप्र
सीद पुण्यकन ॥ ॥ यत्र स्नान ॥ यद्वा सतय द्वादश पुण्यं यद्वा
वन । ॐ देव श्री गृहाण सर्वं यद्वा संगानं दयुषा ॥ ॥ उत्पल स्नान ॥
ॐ उरुमं सर्वं पूषा ॥ सर्वं देव प्रियमिमांसा गृहाण सर्वं पूषा ॥

गव्यं प्रोक्ष्य समर्थिनी ॥ ॥ द्वा द्वादश ॥ ॐ यथा गन्धमा पुष्पं रात्रि र्य
था द्वादशं भद्रं कुरुते श्री संगानं सो रात्रि द्वादशं कुरुते नमः ॥ ॥
देव स्नान ॥ ॐ यम्यं कुरुते मन्त्रं रात्रि यम्यं कुरुते मन्त्रं प्रियं यम्यं कुरुते
सुगन्धं श्री गृहाण देवि रात्रि ॥ ॥ द्वा द्वादश ॥ ॐ देव देहि
यं देहि यः ॥ देहि यं गृह्यते । ॐ देव कुरुते मया देहं पूषा गं द्वादश
गव्यं ॥ ॥ डिहालुखी ॥ ॐ न कुरु पूषा न देवा नाना नैका न हविः ॥
कनवी न कुरु पूषा ॥ ४ ॥ द्वा द्वादश ॥ ॥ गान्धाना ॥ जागो पूषा

सुगंधं च, सुखं चां भादिर्गुणं। त्रयोऽथ तन्महा लोद, पूष्या एतमूह माह
मं॥ ॥ ताना पूष्या॥ उं मालागादिसुगन्धं नि, मात्या नि विवि धा नि य। मया
कृणानि पूजाय, पूष्या न्यागानि गृह्य कर्मा॥ ॥ ध्ये॥ उं मालागादि
यानंद, दह मंदव हाजन, सांया निगं वसह उं, युगी कृता गनाभनी॥ ॥
दोष॥ उं ज्ञा र्थं गेल मय दीप, कृत श्रुति हल पुद, ह कृता य नीरमादि
य, गृह्य कर्मां गजमूह मं॥ ॥ नैव द्य॥ उं वल्गु गन्ध तसा य गं नैव द्य
पुष्पि वद्धन, स्वाद्यं हा र्थं गथा परं, ले र्थं वा र्थं य गृह्य कर्मा॥ अथ

मन॥ ॥ यकात॥ उं य काने की त र वि गं, दधि क्री दु सम त्वि गं, भ
र्क गायु ग पु लं च, गृह्य कर्मां दाय गं वि हा॥ ॥ रु ल॥ जदि मादि ह
ल य र्क, यथा काल समूह र्थ, ह कृता पुद ह ला का नी, जीव नै युति
गृह्य कर्मा॥ ॥ गाम्बूल॥ उं गाम्बूल र्थं ला का नी, सुख रं जन का न र्क।
दव ला क पि यं दि र्थ, दिने भं यु ति गृह्य कर्मा॥ ॥ जगु गन्धे दि॥
गग ४ य जन॥ दू द या दि॥ ॥ गग ४ य जन॥ ४ य जन॥ ४ य जन॥
उं काम दा ये नम ४॥ उं मा क दा ये २॥ उं सि डि दा ये २॥ उं हा ग दा ये २॥

15

10

5

0

5

10

15

20



15

10

5

0

5

10

15

20



15

10

5

0

5

10

15

20



पंचकशास्त्रि॥

सिद्धिपंचमी

आस्त्यवनं लक्षदीयदानपुस्तकमिदम्॥

15
लेभयनिष्ठान्नाने। उर्वं ध्यात्वा तगादवं सर्वपापयुनाशनं ॥ ध्यानपूर्य
॥ ॥ ध्यायेत्तथावथ वर्गं कुर्यात् ॥ ॥ उवाञ्जलिमन्त्रं ॥ उं काशयूष्ययमी
काशं, अग्निर्मातृगंसंरुवः। मितावपुष्टयाः ४ युरं कुमुद्याननमाः स्फुग ॥ ३ ॥
॥ स्नानं ॥ यावनं सर्वेनीर्धनां, गंगमदिसकसागये। स्नानं समर्थिर्नयन सति
लेः श्राययाम्यहं ॥ ॥ वस्तु ॥ कामकयासंजं वस्तुं त्वयैव यथाश्रयं। गृहानमस्तु
नियुज्यते गृहं गायत्रमस्तु ४ ॥ ॥ चन्दनं ॥ मलयादिसंभूतं चन्दनं हि म
नीतले। सर्वसम्यक्दिष्टा कं चन्दनं पुनि गृहं ॥ ॥ सिन्दूरं ॥ वीवरस्तस

5
मूल्यनं निपुच्छद कर्णमस्तु। मृद्वि सिद्धि वरं दाना, गृहाण मूनिपुञ्जव ॥
॥ ॥ धिया उ उमका ॥ कर्णाङ्ग कर्णिकं सूर्यं सुखार्णो गृहीतं। गृहं गी सर्वला
कानी, यत्कायवीर्गं गृहानम ॥ ॥ नसाक ॥ गन्धसोरा गन्धदनाथ, सर्वदया
नियुजिता। सर्वकामयुदानुष्ठां गृहान गन्धचन्दनं ॥ ॥ मालस्नानं ॥ माल
यादिसुगन्धानि माल्यानि विविधानि च। मया दत्तानि योजानि, गृहं गी कुरु
यानय ॥ ॥ गस्नानं ॥ जार्गी कुरुष्णिगतीना, मदनवी वद मालिका। कुरु मधुवि
कापूर्य, पूष्य सकनमास्तु ॥ ॥ रुगसंयु ॥ सोरिर्नयेव कृष्णाः सर्वयोधि

विनाशनं। सर्वसूत्रविनाशनं। गृहणीयसूत्रं ४॥ ॥ त्रिपितृत्वन॥ मही
वर्षवर्गयानि, यूष्यजानी समन्वितं। नानावर्गसूत्रं धानि, जानीयूष्यं गृ
हाणम॥ ॥ दियोसुतु, दियोजुक्तं, दियोद्वारुल॥ नो जयूनी नमस्तु
त्यं, एषियुनी वयानन। लायामूडा जगन्माता, सगीनां यवना सगी॥ यथैकं रु
लकामाय, इवो यूष्या दानानि य। गृहानमूनियू (ऊँ) लायामूडाय नमः ४
॥ ॥ यज्ञ॥ एतत्पुत्रमया दत्तं, अखलं कदाचन मुदिका। सयं जन्मा किं न या
यं, मुक्तावकुवती रुव०॥ ॥ उरुल॥ जनामन एनिर्मू की, यत्र गच्छ यत्र ग

तिं। उरुल जन्मनि सोराय, गृहाणं मृत्यवा रुम॥ ॥ धनन॥ दमनं मदना रुत
सूत्रं च दनरुषिर्ग। दानिदं गत्यं मुचयि, दमनं रुगृहाणम॥ ॥ काणव॥ का
णयूष्ययनी काणं, अग्निर्मानुत संतु व०। मिश्रं वरुणाय यतु, क्रूरं याननमो इरु
न॥ ॥ तुलनी॥ दर्शनाद्वर्द्धनयूष्यं, स्थर्शनात्प्रोयनाशनं। तुलनीयूष्यं दयू
यं, गृहाणयनमश्नव०॥ ॥ नन० पूजनं॥ उं कनयूगमय२॥ उं कनयूगमय
२॥ उं दायनयूगमय२॥ उं कलियूगमय२॥ उं प्रत्यदाय२॥ उं यशस्वदाय२॥ उं
सामवदाय२॥ उं अथर्ववदाय२॥ उं अगस्त्य२॥ उं क्रष्णाश्रुय२॥ उं कलश

15
रुवाय २॥ ॐ रुम्यानय २॥ ॐ अगस्त्यमूर्य २॥ ॐ अगस्त्यमूर्य २॥ ॐ अगस्त्यमूर्य २॥
ॐ मिश्रवत्तय २॥ ॐ राजयुक्ता २॥ ॐ लायामुद्राय २॥ ॐ अष्टाध्याय २॥
॥ ॐ गंगामाय २॥ ॐ रुद्राजय २॥ ॐ विष्णुमिश्रय २॥ ॐ उमदय २॥ ॐ
काश्याय २॥ ॐ वलिष्ठाय २॥ ॐ अरुणाय २॥ ॐ दवाय २॥ ॥ ॐ आदिष्टादिन
वग्रहत्या २॥ १० ॥ ॐ अष्टाध्यायि अष्टाविंशतिनक्षत्रा २॥ २६ ॥ ॐ मयादिष्टा
नक्षत्रा २॥ १२ ॥ ॐ विष्णुदिष्टाविंशतिनक्षत्रा २॥ २७ ॥ ॥ ॐ उमा
दिष्टा अष्टमाष्टक्या २॥ ८ ॥ ॐ अष्टाध्याय २॥ ॐ वल्लय २॥ ॐ वासाय २॥ ॐ हनु

5
मत्त २॥ ॐ विष्णुमिश्रय २॥ ॐ रुद्राजय २॥ ॐ अरुणाय २॥ ॐ मार्कण्डेय २॥ ॐ
कुरुयाताय २॥ ॐ गणयुक्तय २॥ ॐ रुद्राजय २॥ ॐ अष्टाध्याय २॥ ॐ अष्टाध्याय २॥ ॐ
अमृतय २॥ ॐ अमृतय २॥ ॐ अमृतय २॥ ॐ अमृतय २॥ ॐ अमृतय २॥ ॐ अमृतय २॥
ॐ अमृतय २॥ ॐ अमृतय २॥ ॐ अमृतय २॥ ॐ अमृतय २॥ ॐ अमृतय २॥ ॐ अमृतय २॥
गङ्गाकाय २॥ ॐ कर्कटकाय २॥ ॐ यमाय २॥ ॐ महायमाय २॥ ॐ मययालाय २॥
ॐ कलिकाय २॥ ॥ ॐ पूर्वसमूह्या २॥ ॐ पश्चिमसमूह्या २॥ ॐ दक्षिणसमूह्या
२॥ ॐ उग्रसमूह्या २॥ ॥ ॐ मन्त्रय २॥ ॐ मन्त्रय २॥ ॐ केलीसाय २॥

ॐ मलयाय २॥ ॐ मन्त्रा मादनाय २॥ ॐ माहन्त्राय २॥ ॐ श्रीयवनाय २॥ ॐ ह्रम
कृणाय २॥ ॐ मेना कयवनाय २॥ ॐ सर्वयवनाय २॥ ॥ ॐ कीना दार्णवा
य २॥ ॐ दक्षिणा दार्णवाय २॥ ॐ दक्षिणा दार्णवाय २॥ ॐ लवना दार्णवाय २॥ ॐ
काया दार्णवाय २॥ ॐ मंदिला दार्णवाय २॥ ॐ वसा दार्णवाय २॥ ॐ सफस
मूडया २॥ ॥ ॐ उम्बदीयाय २॥ ॐ कृष्णदीयाय २॥ ॐ साकदीयाय २॥
ॐ काष्ठीदीयाय २॥ ॐ नीलदीयाय २॥ ॐ जम्बदीयाय २॥ ॐ यूष्णदी
याय २॥ ॐ सफदीयया २॥ ॥ ॐ रुद्राकाय २॥ ॐ रुद्राकाय २॥ ॐ रुद्र

द्राकाय २॥ ॐ मरुद्राकाय २॥ ॐ जनद्राकाय २॥ ॐ नयद्राकाय २॥ ॐ सत्यद्रा
काय २॥ ॥ ॐ कालायेनमः ॥ ॐ शिखिस्त्यक्त काये २॥ ॐ सर्वदवाय २॥ ॐ
जगन्मूर्त्युय २॥ ॐ हृदयाय २॥ ॐ शिखि २॥ ॐ शिखाये २॥ ॐ कदवा
य २॥ ॐ नगाय २॥ ॐ जम्बुय २॥ ॐ आवाहनादि ॥ ॐ विदवस्तु ॥ ॥
गंगा कलमयूता ॥ ॐ वज्र ॥ ॐ विष्णु २॥ ॐ सदाशिवाय २॥ ॐ जगन्मूर्त्युय २॥
ॐ यमूनाय २॥ ॐ सनमूय २॥ ॐ गुरुय २॥ ॐ कोशिक २॥ ॐ वाग्मय २॥ ॐ वज्रराम
य २॥ ॐ मार्कण्डेय २॥ ॐ काश्याय २॥ ॐ वशिष्ठाय २॥ ॐ व्यासाय २॥ ॐ योगमाय २॥

ॐ संनवाजाय ॥ ॐ यमदय ॥ ॐ आदि सादिनवग्रहस्था ॥ ॐ शुद्ध कामा
दिजुष्ट विन जीवाया ॥ ॐ समुद्र कलनाय ॥ ॐ आवाहनादि ॥ ॥ गायत्र
॥ ज उ म का खान ॥ ॐ हृदयादि उयुजने ॥ ॥ गतावलियुजने ॥ ॐ स्फुट
नक्षत्रयालाय ॥ ॐ नवसिंदमहारे नवाय ॥ ॐ कलाष्टमहारे नवा
य ॥ ॐ नयालवकलादये ॥ ॐ युयागमाहवये ॥ ॐ लकायाना क
सादये ॥ ॐ अग्निग ॥ ॐ रेववाय ॥ ॐ नृनवाय ॥ ॐ रेववाय ॥ ॐ रेववाय ॥
य ॥ ॐ काद रेववाय ॥ ॐ उम रेववाय ॥ ॐ कला लीरेववाय ॥

ॐ शीषदरेववाय ॥ ॐ संहार रेववाय ॥ ॐ उक्ताष्टादिमाहृत्वा ॥ ॐ
सर्वसाक्षगयालत्वा ॥ ॐ आवाहनादि ॥ ॐ उ उ म का खान ॥ ॐ हृदयादि ॥ ॐ
निवलियुजा ॥ ॥ गतागलयगियुजा ॥ ॐ म विनये ॥ ॐ विष्णुवमाय ॥ ॐ
हृनवाय ॥ ॐ लीवाय ॥ ॐ नृवदनाय ॥ ॐ हृवमाय ॥ ॐ गताय
निमृत्वाय ॥ ॐ आवाहनादि ॥ ॐ उ उ म का खान ॥ ॐ हृदयादि ॥ ॐ गताय
गियुजा ॥ ॥ गतागलासयुजने ॥ ॐ नवाये ॥ ॐ रुद्राये ॥ ॐ सेरुद्राये ॥
॥ ॐ सुसी नाये ॥ ॐ सुमनेस ॥ ॐ गतायति दुर्गाये ॥ ॐ विष्णुव सदाशिव

ये शांति कविलादि यस्तु (गमाष्टक लो २॥) अथ उक्तमका खान ॥ उं ह द
यादि ॥ ॐ मि (गमाष्टक लो २॥) ॥ गमाष्टक लो २॥ ॥ उं वेदि दाला ॥
दि स्ताने द व क ल द व ग लो २॥ ॥ उं ॐ ह द व ग लो २॥ ॥ उं क ल द व ग लो २॥ ॥ उं
स ग ह स्य वि वा य ॥ सा अ वा ह ना दि ॥ उं उ म का खान ॥ इ ध न य ॥ उं ह द
यादि ॥ ॐ मि द स्वा यि स्वा य ॥ उं उ म का खान ॥ ॥ ग मा द वे क य ॥ उं उ म का खान ॥
॥ उं ग मा द वे क य ॥ उं स ना त ना य ॥ उं वि द व ॥ उं य मा य ॥ उं अ मि न स ॥ उं
द का य ॥ उं स च र्क का य ॥ उं ग मा द वे क य ॥ उं य ना स ना य ॥ उं अ य रु रु

य ॥ उं उ व स ॥ उं य मा य ॥ उं का य ना य ॥ उं ह द स्य ग य ॥ उं ग
या य ॥ उं लि सि ना य ॥ उं ह ना य ॥ उं अ य ॥ उं य रु व का य ॥ उं
मार्क उ य ॥ उं वे द व ना य ॥ उं ग मा द वे क य ॥ उं का य ॥ उं (गमाष्टक लो २॥)
य ॥ उं वा य ॥ उं व स ना य ॥ उं यि यि ला य ॥ उं स ना य ॥ उं मा ॥ उं
या य ॥ उं सा क ला य ॥ उं स च र्क का य ॥ ॥ उं मि ना व रु मा य ॥ उं ग य
स्ताना य ॥ उं अ रु न द ना य ॥ उं वि ष द द ना य ॥ उं का य ॥ उं यि यि
य ॥ उं ग मा द वे क य ॥ उं यि यि रु मा य ॥ उं ला य मा द वे क य ॥ उं द दि द दि

15
नियतिर्याशां ॥ ॐ नमस्तुलाय ॥ ॐ अगस्त्य मूर्त्यय नमः ॥ ॥ ॐ प्रणम्यदादि
नियतिर्याशां ॥ ॐ यक्ष्याद्युपस्था ॥ ॐ स्वर्ग्ये ॥ ॐ मूर्त्यय ॥ ॐ यानालाय ॥
॥ आवाहनादि ॥ ॥ द्रियाधुनि ॥ ॐ देवार्थ सर्वदेवानां महाभागधनिर्हय ।
गृहं गं सर्वराय न यीयतां कुरु संतु ॥ ॥ काष्ठदृष्टिकादीय ॥ ॐ काष्ठ
दृष्टिरुवदी ॥ यं दृष्टयुक्तं समुद्रं लं । यक्ष्यायायनादयं गृहं गं यीयतां म
या ॥ ॥ धनमाहनीरु ॥ ॥ रुले ॥ ॐ रुलं विविधसंसारं मनीनामनम
रुमं । गुरुनाथ गृहाण दं गृहं गं रुलमुरुमं ॥ ॥ ओम् धी ॥ मनीययिंय

5
लीजावि शुक्रमवालदंगकं । आनीरुलहविडाच । ओषधं युनि गृहं गं ॥
॥ ॥ यक्षान ॥ लुकोलुवा मिश्रं जलिका मूर्तिकारथा । गुरुं यावर्तिका
वाहं यक्षानं युनि गृहं गं ॥ ॥ वीदि ॥ यवाङ्गानि माया नि कालमायक
जावकं । यानयुष्यनिलयेव वाहिसयवमासुग ॥ ॥ नेवय ॥ यदसादि
समायुक्तं सर्वेषां यानयनं । युष्यार्थकामदयेव नेवयं युनि गृहं गं ॥
॥ ॥ गान ॥ ॐ गं गानतु यं गं गुरुं यदनाहं लकालकं । गृहाण सर्व
लाकानां यीयतामुरुमुरुमं ॥ ॥ रुदं रुलयुष्यत्यादि ॥ ॥ यक्षाधुन

कावयोन ॥ गीतवाद्यधन ॥ व्याख्यानश्रवण ॥ ॥ धनलिनसचाइतडा
दमाउद्धय अंगस्यदशनयाय ॥ धनमदकाथासदव्याकअर्थयाय ॥ ईश्व
सद्गुरुलखरुतसर्व अद्वयतत्त्वान ॥ धर्मनिनअर्थविय ॥ उं अश्ववागद
॥ उं अद्यादि ॥ उं यनोदिगानियायानि ॥ प्रायेनसर्वयाधय ॥ अर्थकर्मवयायान
नि अर्थांगलूनमानमः ॥ यऊमानानां अंगस्यवतनिमित्तार्थलूदमर्थयदा
वसादा ॥ उं अयदीपकप्रमि सिद्धार्थदधिगुलं ॥ ईश्वनायसमादाय स
यर्थरुतवन्दन ॥ जानूयाधनवीधत्वा अर्थायार्थनिवेदय ॥ उं अश्वपूर्वद्विय

॥ अद्विष्टद्विष्टयुक्तासुखद्विष्टयः ॥ धर्मगन्तव्यद्विष्टयः ॥ धनिकसकटद्विष्टयः ॥ ल
यर्थः ॥ ॥ यमनहास ॥ उं मनार्द्धमि ॥ यमिष्टा ॥ ॥ यद्वसन्नमलुनयायक ॥ जा
य ॥ ॥ कृष्ण ॥ उं नमः अंगस्य ३ ॥ वागायारकगायनसमूहः ॥ विनयूना ॥ ४
लायामूडायमिश्रीमान् ॥ यासीनमेनमानमः ॥ नमस्कृन्मुखगस्य कस्ययान्याय
ननमः ॥ नमस्कृन्नुयाया सुनद्यानायननमः ॥ नमस्कृविषनाशाय दिगिद
द्विष्टसंस्तिगा ॥ नमस्कृवागनाशाय ॥ कनाशायननमः ॥ नमस्कृदहुरसाय कम
लुधनायव ॥ यमिष्टयनमदव अंगस्यवक्रगजस ॥ नमस्कृवागनूयाय महात्र

15
10
डायननमः॥ वातायीरुदगायन, जीर्णुगजायननमः॥ नमस्तुङ्गुदगायन
बुद्धादविनाशिन ॥ नमस्तुष्टिपूयाय, स्तिपूयायननमः॥ दयामयायदवा
य, स्लानपूयायननमः॥ सर्वनागदन्दव, सर्ववायदनेयन। नागयदुखदावि
द, अलक्ष्मीमलनाशन। सर्वसंयलिदालक्ष्मी, सर्वसौभाग्यदायकः॥ धर्मा
र्थकाममादय, मायपूजयः॥ ४ छियं। नाउनाऊध्वनदाहुं, यद्वयवर्णिदा
यकः॥ नमस्तुष्टावपूयाय, लायाम्पुडायननमः॥ ॥ कलशिया॥ उमासद
रु० विकारावर्णु, दवाधिनार्थवृषासनरु०। विष्णुलक्ष्मीरियाकुमाला, मृष्ट
क३

5
ऊर्यवेयमामिनोमि ॥ ॥ गणेश॥ विष्णुश्च नायवीनाय, विष्णुपूयायननमः॥ स
र्वविद्भिदन्दव, सर्वलभर्णिनमाः॥ ॥ वलि॥ नित्यानन्दयनंभर्ण, नि
क्षत्रऊनिवामय। यामातीतयनंभूचौ, रैववर्णनमाम्पदं ॥ ॥ अग्रामे॥
वन्दितासिवजिह्वन, विष्णुमिह्वनउद्गुना। कविपदमयाय, उन्मयादुः
कृर्णकृर्ण ॥ ॥ दूयारिय्या॥ सर्वमङ्गपमाङ्गल्य, शिवसर्वार्थसाधिक। शर्व
गुर्विक। श्रीनीनानायनीनमाः॥ ॥ यायादयायकर्मोर्ण ॥ ॥ यजमान
सुअगस्तुवगनिमित्तार्थवृताश्चनविधे, अगुगन्ध्यादि ॥ ॥ मञ्जुलसयाद

खाननकुचकं ॥ मल्लुलसनक ॥ लाहानसिचक ॥ दवदकिधमनयक ॥ वांझध
 यूजा ॥ दकिधमदान ॥ ॥ दवाधीधदि ॥ ॐ सकपृषय ॥ ॥ न्यासलिकाय ॥
 दवादिविसर्जन ॥ ॐ उदयनमस ॥ ॥ सूर्यसाकिथय ॥ ॥ यऊमानादि
 धकं ॥ कसकेनन ॥ ॐ दवस्यत्वा ॥ यन ॥ ॐ यददक ॥ सिन्धुमाहनी ॥ ॐ त्वं उवि
 ददा ॥ ॥ सिन्धुमूढ अर्थस ॥ ॐ उउस्वानविय ॥ ॐ श्रीश्वर ॥ ॥ गणव
 ल्यादिक्काय ॥ यउऊ यिनयक ॥ वलिथानस ॥ ॥ ग्रामसायाक ॥ ईश्वारिवाक्काय
 ॥ अशककलनवासक्काय ॥ ॥ धर्मनियनि कीनानयासन ॥ ॐ ह्यगस्तुवतसमार्य ॥
 यादईयुद्धकदृष्टा नादईलिचिगंमया ॥ यदि शुद्धमे शुद्धवा ॥ ॥ धनी यमहृद्वे ॥

ॐ गुरुयाथलिलयूजाविधिः॥ अथादि॥ यजमानस्यथलिलार्चनकर्तृसूर्यार्च
नमः॥ यूर्यः२॥ न्यासार्चयारयूजा॥ आसनं॥ ॐ अथानासादि२॥ ॐ धर्मादि२
॥ ॐ यमासनायनमः॥ ॐ क्रमासनाय२॥ ध्यानं॥ ॐ गुरुमुनिमहत्तदकिना
दिष्टपवित्रिणि॥ पुनरुपवेनागसां चतुर्वाङ्महादेवैरुवाचिनोरुवाचय
शुक्राम्बनवर्ममनि॥ नवविधमूनवृयं ध्यायत्यनमनुविना॥ सर्वयायेधिनिर्मूकावि
षुलार्कसगच्छति॥ ध्यानपूर्यः२॥ ॥ प्रियाकुलि॥ ॐ श्रीं नंदीकं गुरुयायक्रमाङ्कवा
यलायां मूढायनयसाहा॥ ३॥ ॐ सांसाकिन्ये२॥ ॐ कांकाकिन्ये२॥ ॐ लांलाकिन्ये३॥ ॐ

यचकुङ्कुजाय, रुच्यद्वन्द्वययुषीव्याय । कायुष्यशवायमहादवाय, संसान
 इ० वावुवगावमाय ॥ अरुगन्धादि ॥ ॥ वृत्तिअरुगन्धादि ॥ ॥ वृत्तिअरुगन्धादि ॥
 विधि० ॥ ॥ संवत् २० योषकुङ्कुजायदध्यानि ॥ थोनादिनीनकुरुकुङ्कुयाग
 आदित्यवानथकुङ्कुशीर्वसीधनगर्मदानज्वादिहिमसर्वदाथवायवृद्धदिनश
 ना ॥ ॥ पुरा ॥ दर्शनालमानन, कलाबहुगतादले ॥ सवजकागिवामुनी वाकसम्
 र्म ॥ उयनयनया सिलागकना ॥

स्वानवा १
 कयुलि
 म्यात
 मास
 दास
 अरुग
 म्हाधरुस
 दासमालकुमाल
 पूजाकायमूगाल ॥ इवालाव



कलनस कागवाग्याव
 गीथलेखने श्रीहीकसमान
 कायक, कलनवागनम
 योग, पूजन ॥

मन्त्र
 थियलि
 जातिलि
 उकमाल
 लवद

इवालाव
 जितमल
 हलउ धनउ वधी ॥

जितमल धनउ वधी ॥